International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(2): 204-206
Received: 11-11-2022
Accepted: 29-12-2022

महेन्द्र सिंह
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
महेन्द्र सिंह
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

भारत–चीन सम्बन्ध और चीन की मोतियों की माला नीति का प्रभाव

महेन्द्र सिंह

सारांश
भारत की विदेश नीति में चीन के साथ हमारे सम्बन्धों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जिस समय भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई उस समय चीन में भयंकर गृह युद्ध चल रहा था। इधर भारत की अपनी अनेक समस्याएँ थी जो देश के विभाजन से उत्पन्न हुई थी। अतः आरम्भ में भारत–चीन सम्बन्ध केवल औपचारिक थे। चीन की क्रांति के पश्चात दोनो देशों में शीघ्रता से घनिष्ट और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित होने लगे। वर्तमान समय में भारत–चीन के मध्य सीमा विवाद प्रमुखता से उभरकर सामने आ रहा है। चीन मोतियों की माला नीति के माध्यम से भारत को लगातार घेरने का प्रयास कर रहा है। मोतियों की माला नीति के तहत चीन भारत के पड़ोसी देशों में अपने सैनिक अड्डे बनाकर अपनी स्थिति को मजबूत कर रहा है जिससे भारत को घेरा जा सके। और भारत पड़ौसी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।

कुटशब्दः भारत–चीन सम्बन्ध, मोतियों की माला नीति, विवाद के बिन्दु।

प्रस्तावना
भारत की स्वतंत्रता के बाद यदि पड़ौसी देशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की बात की जाये तो चीन के साथ भारत के सम्बन्ध सर्वाधिक शंकास्पद और रहस्यमय किंतु संवेदनशील और दूरगामी प्रभाव वाले रहे हैं। भारत–चीन के सम्बन्धों में बौद्ध धर्म का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि बौद्ध धर्म की जन्मभूमि भारत, चीन का गुरु हैं। भारत एवं चीन न केवल पड़ौसी राष्ट्र हैं बल्कि दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध भी रहे हैं। 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ, उसके दो वर्ष पश्चात् चीन में कोमिन्तांग सरकार का पतन हुआ तथा साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। साम्यवादी सरकार की स्थापना से ही अन्दाज लगाया जाने लगा था कि भारत व चीन के सम्बन्धों में कई तरह की कठिनाइयाँ हो सकती हैं। इसका कारण था कि भारत व चीन की तुलनात्मक स्थिति बहुत भिन्न थी, जैसे भारत की जनसंख्या, क्षेत्रफल, सैन्य खर्च, सैनिक तथा विदेशी मुद्रा भण्डार चीन की तुलना में बहुत कम थे तथा वर्तमान में भी कम है ।
इसी तरह भारत की विदेश नीति शुरु से ही शान्तिपूर्ण, सह–अस्तित्व एवं पंचशील के सिद्धांतों पर आधारित है। वहीं साम्यवादी चीन की नीति आक्रामक, साम्राज्यवादी और विस्तारवादी रही है। चीन एशिया महाद्वीप में अपना प्रभाव जमाने की कोशिश करता है और चाहता है कि भारत कभी भी उससे आगे नहीं निकले तथा उसके जितना ताकतवर नहीं बने। चीन भारत को एक कमजोर राष्ट्र के रूप में देखना चाहता है और ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य का भाव रखता है। भारत–चीन सम्बन्धों को विभिन्न काल खण्ड़ों में विभक्त कर देख सकते हैं।

भारत की स्वतंत्रता (1947) से 1957 तक
जब चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई तो भारत ने सबसे पहले चीन को राजनीतिक मान्यता प्रदान की थी। इतना ही नहीं जब चीन का कोरिया के साथ युद्ध चल रहा था तब भी भारत ने चीन की सहायता की व समर्थन दिया था। हालांकि इस सहायता व समर्थन को लेकर विश्व के अनेक देश भारत से नाराज थे। चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता दिलाने में भी भारत ने भरपूर प्रयास किया था लेकिन वही चीन आज संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थायी सदस्यता में भारत का विरोधी बना हुआ है ।
1954 में भारत व चीन के मध्य एक व्यापारिक समझौता हुआ था और उसी समय भारत ने तिब्बत पर भी चीन की प्रभुता को स्वीकार कर लिया था । 1954 में ही चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चाऊ–एन–लाई ने भारत की यात्रा की तथा नेहरु जी को चीन आने का निमन्त्रण भी दिया था। अक्टूबर 1954 में नेहरूजी ने चीन की यात्रा पूर्ण की थी।
इन दोनों की यात्रा के अगले वर्ष 1955 में बाण्डुंग में एक सम्मेलन का आयोजन हुआ था जिसमें दोनों नेताओं ने मिलकर सहयोग के साथ कार्य किया था। 1954 में जब भारत व चीन के मध्य पंचशील समझौता हुआ उस समय पण्डित जवाहर लाल नेहरु ने हिन्दी चीनी भाई–भाई का नारा दिया था।

1957 से 1978 तक भारत–चीन सम्बन्ध

इस दौर में दोनों देशों के सम्बन्ध अधिक अच्छे नहीं रहे, क्योंकि चीन अपने आप को विश्व गुरु मानने लगा था और भारत इस गलतफहमी में था कि चीन भारत का एक अच्छा पड़ौसी है। क्योंकि पंचशील समझौते तथा बाण्डुंग सम्मेलन के समय दोनों के सम्बन्ध बहुत मधुर थे। धीरे–धीरे सम्बन्धों में कड़वाहट बढ़ने लगी तथा चीन अपनी साम्राज्यवादी और विस्तारवादी नीति के तहत भारत पर आक्रमण करने लगा था। इस दौरान भारत चीन के मध्य विवाद के अनेक कारण थे जैसे तिब्बत की समस्या, सीमा विवाद, और 1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण आदि ।

1978 से वर्तमान समय तक

इस काल में दोनों देशों के मध्य संवाद व टकराव दोनों ही स्थितियों को देखा जा सकता था। इस समय भारत के कई प्रधानमंत्रियों ने चीन की यात्रा की और चीन के प्रधानमंत्रियों ने भारत की यात्रा की तथा दोनों ने ही सम्बन्धों को सुधारने का प्रयास किया। उसी समय चीन में चीन द्वारा भारत महोत्सव का आयोजन किया गया, तथा भारत–चीन के मध्य हवाई सेवा समझौता हुआ और भारतीय तथा चीनी सेनाओं ने संयुक्त सैन्य अभ्यास भी किया तथा भारत–चीन के मध्य होटलाइन सेवा शुरु की गई। भारत में जब सरकार बदली तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सन् 2015 में चीन की यात्रा की तथा कई समझौतों पर हस्ताक्षर किये। साथ ही जून 2015 में कैलाश मानसरोवर जाने वालों के लिए नाथूला मार्ग खोल दिया गया और अक्टूबर 2019 में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तमिलनाडु के शहर महाबलीपुरम में मुलाकात हुई।

21वीं सदी में भारत–चीन सम्बन्ध

21वीं सदी में भारत–चीन सम्बन्धों में अधिक उतार–चढ़ाव का दौर देखा गया है क्योंकि चीन भारत की सीमा में अतिक्रमण कर उस क्षेत्र पर अपना दावा साबित करता है।वर्तमान समय में भारत–चीन के मध्य सीमा विवाद, नदी जल विवाद, चीन द्वारा भारत की समुद्री घेराबन्दी आदि विवाद के विषय बने हुए हैं। कभी–कभी चीन अपने नक्शों में बदलाव भी करता रहता है और भारत के क्षेत्रों को अपना बताकर उन पर कब्जा कर लेता है जिससे भी दोनों देशों के मध्य विवाद उत्पन्न होता है। इसी तरह से चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा को भी मानने को तैयार नहीं है। इन सभी कारणों से दोनों देशों के मध्य कभी–कभी युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। चीन भारत के उत्तर में स्थित है, जो कि बांग्लादेश के बाद भारत के साथ सीमा साझा करने वाला दूसरा बड़ा देश है। 21वीं सदी में चीन आर्थिक व सामरिक शक्ति के रूप में उभर रहा है और माना भी जाता है कि 21वीं सदी चीन की सदी होगी। भारत ने चीन के साथ डी– लिंकिंग नीति को अपनाया है, जिसका अर्थ है आर्थिक सम्बन्धों को व सीमा विवाद को अलग–अलग देखा जाता है ।

चीन अपनी 'मोतियों की माला' नीति और 'वन बेल्ट वन रोड' परियोजना के माध्यम से दक्षिण एशिया में अपनी शक्ति को बढ़ा रहा है। कई योजनाओं के माध्यम से चीन हिन्द महासागर में अनेक बन्दरगाहों का निर्माण कर रहा है। मोतियों की माला नीति के तहत चीन पाकिस्तान में ग्वादर बन्दरगाह, श्रीलंका में कोलम्बिया व हम्बनटोटा बन्दरगाह, बांग्लादेश में चटगांव, म्यांमार में कायाकव्यू, थाइलैण्ड में लीम चबांग व कम्बोडिया में सिहानौक विल्ले पोर्ट का निर्माण कर भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है।

चीन भारत के पड़ौसी देशों को आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाकर उन देशों को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है, जिससे जरूरत पड़ने पर भारत के खिलाफ काम में ले सके। इसी तरह भारत ने भी सुरक्षा के लिए अनेक कदम उठाये हैं। जैसे भारत ने सामरिक नीति के तहत मालाबार सैन्य अभ्यास जो कि भारत व अमरीका के मध्य होता था इसमें वर्ष 2015 में जापान को भी शमिल किया गया है। इसी तरह भारत भी एस. सी. ओ. तथा ब्रिक्स की बैठकों के माध्यम से चीन के साथ सम्बन्धों को सुधारने का प्रयास कर रहा है।

चीन पिछले कई वर्षों से सीमा का उल्लंघन कर रहा है तथा भारत के कई हिस्सों को अपने नक्शे में दिखाकर उन पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है। भारत चीन के मध्य विवाद के कई बिन्दु हैं जैसे चीन द्वारा डोकलाम क्षेत्र में रोड का निर्माण शुरु किया जाना, अरुणाचल की सीमा के पास रेल्वे प्रोजेक्ट, ब्रह्मपुत्र नदी जल विवाद तथा हाल ही में ब्रह्मपुत्र नदी (चीन में सांग्पो कहा जाता है) पर चीन द्वारा अनुप्रवाह पनविद्युत परियोजना के निर्माण की अनुमति देना । यदि यह बांध बनता है तो भारत में जल की गुणवत्ता, पारिस्थितिकी संतुलन और बाढ़ आदि पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। हाल ही में जून 2020 में लद्दाख में स्थित गलवान घाटी में दोनों सेनाओं के मध्य झड़प हुई जिसमें भारत के 20 जवान शहीद हो गये ।

आज के हालातों को देखते हुए हमारे लिए शायद यही जरूरी है कि हमें चीन को कह देना चाहिए कि जब तक वह पूर्वी लद्दाख सहित टकराव के सभी बिन्दुओं का समाधान नहीं करें तब तक बातचीत का कोई औचित्य नहीं रह जाता ।

मोतियों की माला नीति

इस नीति द्वारा चीन भारत को घेरना चाहता है और इस नीति का दूसरा उद्देश्य है चीन का विश्व में अपना दबदबा कायम करना तथा अपने उद्योगों के लिए अकूत संसाधनों का इंतजाम भी करना। इस नीति का शुभारम्भ चीन ने 2005 में किया था, जिसके तहत वह भारत को घेरने के लिए पाकिस्तान के ग्वादर, बांग्लादेश के चटगांव, म्यांमार के कोको द्वीप, श्रीलंका के हम्बनटोटा, उत्तरी अफ्रीका के जिबूती और मालदीव के दक्षिणी द्वीप पर बंदरगाहों तथा निगरानी तंत्र का कार्य कर रहा है । इनके माध्यम से वह भारत की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखना चाहता है। इसी नीति के तहत चीन भारत के पड़ौसी देशों से अच्छे सम्बन्ध बनाकर अपने पक्ष में करना चाहता है ताकि भविष्य में भारत के खिलाफ उपयोग कर सके । एशिया में चीन की बढ़ती आर्थिक और सैन्य दादागिरी पर लगाम लगाने के लिए क्वाड के देश मालाबार के नाम से संयुक्त सैन्य अभ्यास भी करते हैं। क्वाड में अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत शामिल हैं।

निष्कर्ष

चीन की मोतियो की माला नीति भारत की सामुद्रिक सुरक्षा को खतरे में ड़ालती है। चीन वर्तमान में अधिक पनडुब्बियों, युद्धपोतों और विध्वंसक का विकास कर रहा है और पास के पानी में उनकी मौजूदगी से भारत की समुद्री सुरक्षा को खतरा है। भारत सरकार के संसाधन राष्ट्र की सुरक्षा और रक्षा पर अधिक केंद्रित होंगे। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा अधिकतम आर्थिक विकास हासिल नहीं किया जा सकेगा। यही भारतीय उपमहाद्वीप में अस्थिरता की जड़ होगी। हिन्द महासागर में भारत को मिलने वाला सामरिक लाभ कम हो जाएगा। हालांकि, मोतियो की माला के भौगोलिक सिद्धांत के अनुसार, चीन आसानी से भारत को घेर सकता था और भारत पर हावी हो सकता था।

संदर्भ

1. अरूण शौरी, "सबक जो चीनियों ने सिखाए और हम सीखना ही नहीं चाहते", प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011
2. पुष्पेश पंत, "इक्कीसवीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध", टाटा मैक्ग्राहिल्स पब्लिकेशन, 2010
3. वी. पी. दत्त, "बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति",

हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2009
4. सिंह रामविजय, "भारत चीन सम्बन्ध : एक संवाद", राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015
5. बिस्वाल तपन, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध", मैकमिलन प्रकाशन, मेरठ, 2012
6. वी. एन. खन्ना, लिपाक्षी अरोड़ा, लैस्ली कुमार, "भारत की विदेश नीति", पंचम संस्करण, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., नोएडा (उत्तर प्रदेश), 2019
7. www.india.gov.in